

SHRI ASOKE KUMAR BHATTACHARYYA (POSTHUMOUS)

Shri Asoke Kumar Bhattacharyya was an eminent archaeologist, a museologist, an art historian, a professor and an academic with a unique depth and breadth of versatility of scholarly acumen. Starting humbly as a lecturer in a small college in suburban Kolkata, Sri Bhattacharyya rose to leadership positions at national levels, earning repute as an authority in his field nationally and globally.

2. Born on February 01, 1919, Shri Bhattacharyya topped in Matriculation in 1934 from South Suburban School. In 1938, he received the Kavyatirtha from the Govt. Sanskrit Parishat, followed by M.A. in Sanskrit in 1941 (Spl subject Epigraphy & Iconography) from Calcutta University in which he stood Ist Class Ist. In 1942, he received the Puranatirtha from the Govt. Sanskrit Parishat. In 1949, he became Premchand Raichand Scholar of Calcutta University for his Studies in Jaina Iconography. In 1952, he received his M.A. in Arabic from Calcutta University, specializing in Perso-Arabic Epigraphy and Islamic Numismatics. He was a gold medalist all along. Shri Bhattacharyya trained in archaeology under Calcutta University by undertaking excavation of Bangarh, Taxila (now in Pakistan) and Sisupalgarh under the Archaeological Survey of India. Shri Bhattacharyya also studied Museology at the Ecole du Louvre, Paris, on a Government of France fellowship, obtaining the final Diploma from the Museums Association of England, London, where he was elected Fellow.

3. On return, Shri Bhattacharyya was appointed the Superintending Archaeologist and Head, Museums Branch, of the Archeological Survey of India, Kolkata. In 1965, he was appointed Director of Indian Museum. Kolkata, which he served till his retirement in 1975. Sri Bhattacharyya always held concurrent teaching positions. He served as the Honorary Lecturer at the Post Graduate Department of Sanskrit, as well as Department of Islamic History and Culture, Calcutta University, and School of Archaeology, Archaeological Survey of India.

4. Shri Bhattacharyya came to be noticed at a national level and he was deputed to represent Indian art and culture at world forums. To highlight some: In 1966, as Director, he was selected by the Ministry of Education, Government of India, to represent India at the Exhibition of Indian Art in Germany, followed in 1968 to attend the International Conference of Art Experts in Tokyo, Japan. In 1972, he was invited by the Museums Association of England to lecture at the Museums Conference in Norwich, at the museums of Bratislava and Prague, at Pergamon Museum, Berlin; in 1973, he was deputed by the Government of India to attend the International Conference on Modernization of Asian Museums, convened by the International Council of Museums, in Tokyo. In 1976 he became the first Indian fellow of the Japan Foundation. He later served as Visiting Professor of Indian Art at the National University and University of Chinese Culture, Taipei. He received a Fellowship from the Royal Government of Thailand in 2000 to research Indo-Thai cultural missions.

5. Shri Bhattacharyya retired in 1975 as Director of Indian Museum, Kolkata. Thereafter, he focused on research and publication. He was awarded the prestigious Jawaharlal Nehru Fellowship in 1984, followed by Indian Council of Historical Research Senior Academic Fellowships. His magnum opus 'A Corpus of Dedicatory Inscriptions from Temples of West Bengal' (1984) was a path breaking work in the fields of Indian epigraphy, linguistics and art. In 2012, he received the Acharya Hemchandra Suri Samman Puraskar from the Yashvant Dharmartha Trust, New Delhi for his outstanding contribution to Jaina epigraphy and art. Shri Bhattacharyya has to his credit, 29 published books on various aspects of art, archaeology, epigraphy and numismatics and 100s of research articles in top journals, besides writings, musings and lectures at leading institutions of the country and abroad.

6. Shri Bhattacharyya passed away on June 11, 2016.



श्री अशोक कुमार भट्टाचार्य (मरणोपरांत)

श्री अशोक कुमार भट्टाचार्य प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता, संग्रहालयविद, एक प्रख्यात इतिहासकार, अथाह ज्ञान-भंडार एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी शिक्षाविद एवं प्रोफेसर थे। कोलकाता के निकट अर्द्धशहरी क्षेत्र के एक साधारण कॉलेज में व्याख्याता के पद से शुरू करते हुए अपने क्षेत्र में आपने राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर ख्याति अर्जित कर स्वयं को राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी विद्वानों में सिद्ध किया।

2. आपका जन्म 01 फरवरी, 1919 में हुआ। आपने साउथ सबअर्बन स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा में टॉप किया। वर्ष 1938 में आपने गवर्नमेंट संस्कृत परिषद् से काव्यतीर्थ प्राप्त किया एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय से वर्ष 1941 में आपने संस्कृत में स्नातकोत्तर किया (विशेष विषय: पुरालेखशास्त्र एवं प्रतिभा विज्ञान), जिसमें आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आपको गवर्नमेंट संस्कृत परिषद से वर्ष 1947 में पुराणातीर्थ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जैन इकोनोग्राफी में अपने अध्ययनों के कारण आपको कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रेमचंद रायचंद स्कॉलर बनाया गया। वर्ष 1952 में आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अरबी में स्नातकोत्तर किया, जिसमें आपने फारसी-अरबी पुरालेख शास्त्र और इस्लामी मुद्राशास्त्र में विशेषज्ञता प्राप्त की। आप सदैव ही स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता रहे। आपने बानगढ़, तक्षशिला (अब पाकिस्तान) में कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत उत्खनन कार्य में एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत शिशुपालगढ़ में उत्खनन कार्य में प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने फ्रांस सरकार की फेलोशिप पर इकोले-डू-लौवरे, पेरिस में संग्रहालय शास्त्र का अध्ययन किया तथा म्यूजियम्स एसोसिएशन ऑफ इंग्लैंड, लंदन से अंतिम डिप्लोमा प्राप्त किया, जहां आपको फेलो चुना गया।

3. देश वापस आने के बाद, आपको भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, कोलकाता के संग्रहालय शाखा का अधीक्षक पुरातत्वविद एवं अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वर्ष 1965 में आपको भारतीय संग्रहालय, कोलकाता के निदेशक के पद पर चयनित किया गया जहां आप वर्ष 1975 में अपनी सेवानिवृत्ति के समय तक कार्यरत रहे। आप हमेशा समवर्ती शिक्षक कार्य के पदों पर भी कार्यरत रहे। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्कृत के स्नातकोत्तर विभाग तथा इस्लामिक इतिहास एवं संस्कृति विभाग तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के स्कूल ऑफ आर्केलॉजी में मानद व्याख्याता के पद पर भी सेवाएं दी हैं।

4. आपको राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई तथा विश्व मंचों पर भारतीय कला एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने के लिए आपको प्रतिनियुक्त किया गया। इनमें से कुछ प्रमुख हैं:- वर्ष 1966 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा जर्मनी में आयोजित भारतीय कला प्रदर्शनी में भारत के प्रतिनिधित्व के लिए आपका चयन निदेशक के रूप में किया गया, इसके बाद आपको वर्ष 1968 में टोक्यो, जापान में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ आर्टस एक्सपर्ट में भाग लेने के लिए चुना गया। वर्ष 1972 में म्यूजियम्स एसोसिएशन ऑफ इंगलैंड द्वारा आपको ब्रेटिस्लवा एवं प्राज्ञ संग्रहालयों, परगामोन संग्रहालय, बर्लिन, संग्रहालयों का सम्मेलन, नार्विच में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया; वर्ष 1973 में टोक्यो में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ मॉडरनाईजेशन ऑफ एशियन म्युजियम्स में भाग लेने के लिए आपको भारत सरकार द्वारा भेजा गया। वर्ष 1976 में जापान फाउंडेशन के आप प्रथम इंडियन फेलो बनें। बाद में, आपने नेशनल यूनिवसिटी ऑफ चाइनिंज कल्चर ताइपे में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। भारत-थाई संस्कृति मिशन पर अनुसंधान करने के लिए आपको रॉयल गर्वनमेंट ऑफ थाइलैंड से फेलोशिप प्राप्त हुई।

5. आप वर्ष 1975 में भारतीय संग्रहालय, कोलकता के निदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। इसके बाद आपने अनुसंधान एवं प्रकाशन पर ध्यान दिया। वर्ष 1984 में आपको प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू फेलोशिप से सम्मानित किया गया; इसके बाद भारतीय एतिहासिक अनुसंधान परिषद के सीनियर एकेडेमिक फेलोशिप से सम्मानित किया गया। आपकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'ए कोर्पस ऑफ डेडिकेटरी इन्सक्रिपशन्स फ्रॉम टेम्पल्स ऑफ वेस्ट बंगाल' (1984) भारतीय पुरालेख शास्त्र, भाषा-विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण है। वर्ष 2012 में आपको यशवंत धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली से जैन पुरालेख एवं कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु आचार्य हेमचन्द्र सूरी सम्मान पुरस्कार दिया गया। कला, पुरातत्व, पुरालेख एवं मुद्राशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर आपने 29 पुस्तकें प्रकाशित की है तथा आपने देश एवं विदेश के प्रमुख संस्थानों में दिये गए अपने अभिभाषणों, आलेखों एवं शोध पत्रों के अतिरिक्त शीर्ष पत्रिकाओं में 100 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किये हैं।

6. 11 जून, 2016 में आपका देहावसान हो गया।